Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJIF 2016 = 4.44, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.48612, AUG-SEPT 2017, VOL- 4/23

बिलासपुर में माध्यमिक स्तर के शिक्षकों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

विंदेश्वरी पवार[1], Ph.D. & राजेश वर्मा[2]

[1]सहायक प्राध्यापक शिक्षा विभाग गुरु घासीदास विश्वविद्यालय; केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर छग.

[2]एम. एड. छात्र शिक्षा विभाग गुरु घासीदास विश्वविद्यालय; केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर छग.

Abstract

प्रस्तुत लघु शोध के माध्यम से शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के अध्ययन से संबन्धित है । शोध के उद्देश्य इस प्रकार है– बिलासपुर में षासकीय एवं अषासकीय माध्यमिक विद्यालय के षिक्षकों का षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमानों का तुलना करना। बिलासपुर में माध्यमिक विद्यालय के महिला एवं पुरुश षिक्षकों का षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमानों का तुलना करना। बिलासपुर में माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान एवं गैर–विज्ञान विशययी षिक्षकों का षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमानों का तुलना करना। उद्देश्यों के आधार पर परिकल्पना का निर्माण किया गया| प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का चयन चयन किया गया है। अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर के माध्यमिक विद्यालय के षिक्षकों को लिया गया है। जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर के माध्यमिक विद्यालयों में से 100 षिक्षकों का ‘‘साधारण यादृच्छिक न्यादर्ष‘‘ विधि द्वारा चयन किया गया। माध्यमिक विद्यालय के षिक्षकों की षैक्षिक अभिवृत्ति के निर्धारण के लिए डॉ. एस. पी. अहलूवालिया द्वारा निर्मित व प्रमाणीकृत मापनी का प्रयोग किया गया। प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान,मानक विचलन एवं टी मूल्य की गणना की गयी है। षासकीय एवं अषासकीय माध्यमिक विद्यालय के षिक्षकों का षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया। माध्यमिक विद्यालय के महिला एवं पुरुश षिक्षकों का षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान विशययी एवं गैर विज्ञान विशययी षिक्षकों का षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

अध्यापक चाहे किसी भी स्तर का हो प्राथमिक स्तर, माध्यमिक स्तर, उच्चतर माध्यमिक स्तर या महाविद्यालयी स्तर का हो वह षिक्षा व्यवस्था में महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। षिक्षक षिक्षा प्रक्रिया के प्रषासन को अपनी मानसिक धारणा तथा षिक्षा या प्रारंभिक ज्ञान द्वारा फैलाता है। षिक्षक संपूर्ण षिक्षा व्यवस्था का मेरूदण्ड है, समस्त षैक्षिक कार्यक्रम के संचालन में उनकी भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, फिर भी कुछ एक दषाओं के दौरान षिक्षकों के स्थिति में सभी ओर से गिरावट आयी है जिसके कारण षिक्षक की गुणवत्ता प्रभावित हुई है। आज के आधुनिक युग में देष जहॉ उत्तरोत्तर प्रगति कर रहा है, नित नये अनुसंधान हो रहे है, ज्ञान के भंडार में वृद्धि हो रही है, वहॉ कुछ षिक्षक अपने कर्तव्य के प्रति अत्यंत जागरूक है, वही यह भी देखने में आता है कि षिक्षकों का एक वर्ग अपने कर्तव्य के प्रति निश्क्रिय एवं उत्तरदायित्वहीन होता जा रहा है अतः अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस की गई ।

उद्देश्य

1. बिलासपुर में षासकीय एवं अषासकीय माध्यमिक विद्यालय के षिक्षकों का षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमानों का तुलना करना।
2. बिलासपुर में माध्यमिक विद्यालय के महिला एवं पुरुश षिक्षकों का षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमानों का तुलना करना।
3. बिलासपुर में माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान एवं गैर–विज्ञान विशययी षिक्षकों का षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमानों का तुलना करना।

परिकल्पना

1 बिलासपुर में षासकीय एवं अषासकीय माध्यमिक विद्यालय के षिक्षकों का षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं होगा।
2 बिलासपुर में माध्यमिक विद्यालय के महिला एवं पुरुश षिक्षकों का षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं होगा।
3 बिलासपुर में माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान एवं गैर–विज्ञान विशययी षिक्षकों का षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं होगा।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का चयन चयन किया गया है।

जनसंख्या

अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर के माध्यमिक विद्यालय के षिक्षकों को लिया गया है।

न्यादर्श

जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर के माध्यमिक विद्यालयों में से 100 षिक्षकों का ''साधारण यादृच्छिक न्यादर्ष'' विधि
द्वारा चयन किया गया। न्यादर्ष का विवरण सारणी 3.1 में दिया गया है।

सारणी 3.1– विद्याालय, विशय और लिंग वार षिक्षकों की संख्या

विद्यालय →	षासकीय		अषासकीय		कुल संख्या
विशय ↓	पुरुश	महिला	पुरुश	महिला	
गैरविज्ञान विशययी	16	15	8	14	53
विज्ञान विशययी	14	9	12	12	47
कुल संख्या	30	24	20	26	100

उपकरण

प्रयुक्त षोध माध्यमिक विद्यालय के षिक्षकों की षैक्षिक अभिवृत्ति के निर्धारण के लिए डॉ. एस. पी. अहलूवालिया द्वारा निर्मित व प्रमाणीकृत मापनी का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण

अध्ययनों के उद्देष्यों के अनुसार प्राप्त प्रदत्तों को अनेक समुहों में वर्गीकृत कर इनमें से निश्कर्श निकालने हेतु मध्यमान,मानक विचलन एवं टी मूल्य की गणना की गयी है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

परिकल्पनाओं की पुश्टि के लिए परिकल्पना के अनुसार मध्यमान, मानक विचलन, टी–मूल्य आदि सांख्यिकीय विधियों से समूह के अंतर तथा सार्थकता की जॉच 0.05 उच्च सार्थकता स्तर पर की गई है।

H01 बिलासपुर में षासकीय एवं अषासकीय माध्यमिक विद्यालय के षिक्षकों का षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं होगा।

सारणी क्रमांक–4.1

षासकीय एवं अषासकीय माध्यमिक विद्यालय के षिक्षकों का षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–मूल्य ’0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक अंतर है।

प्रतिदर्ष	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी–मान	सारणी मान
षासकीय	54	44.31	6.60	0.50	2.48	1.98
अषासकीय	46	44.56	6.05			

आकृति क्रमांक–4.1

षासकीय एवं अषासकीय माध्यमिक विद्यालय के षिक्षकों का षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान व मानक विचलन

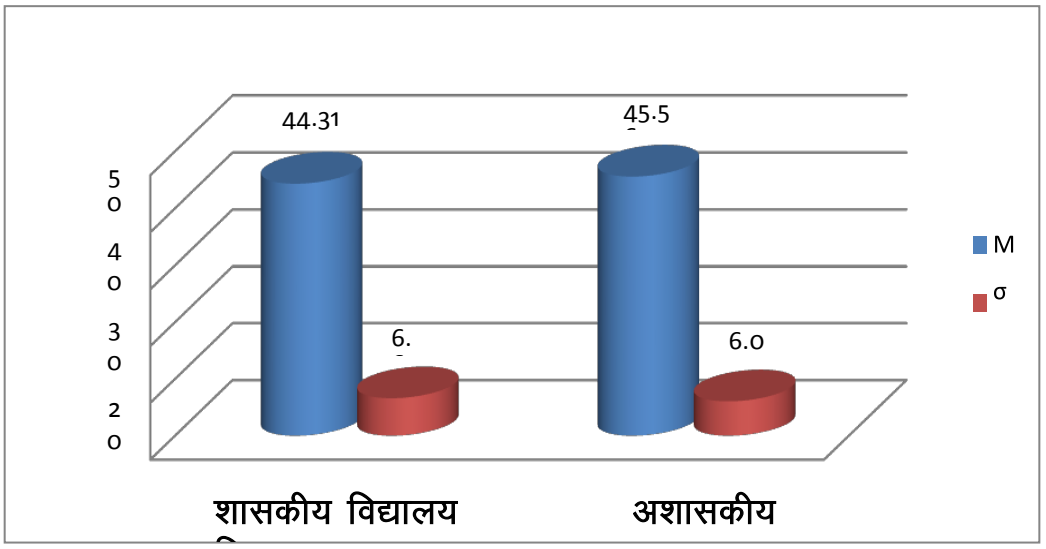

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

सारणी क्रमांक–4.1 एवं आकृति क्रमांक–4.1 के अवलोकन से स्पश्ट है षैक्षिक अभिवृत्ति के आयाम अध्यापन व्यवसाय के प्रति षासकीय एवं अषासकीय माध्यमिक विद्यालय के षिक्षकों का मध्यमान क्रमषः 44.31 व 45.56 तथा मानक विचलन क्रमषः 6.60 व 6.05 है। इससे ज्ञात होता है कि षासकीय माध्यमिक विद्यालय के षिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय का मध्यमान अषासकीय माध्यमिक विद्यालय के षिक्षकों से कम है परंतु मानक विचलन से स्पश्ट है कि षासकीय माध्यमिक विद्यालय के षिक्षकों का अध्यापन व्यवसाय में भिन्नता अधिक है जबकि अषासकीय माध्यमिक विद्यालय के षिक्षकों का अध्यापन व्यवसाय में कम भिन्नता है। षिक्षकों के इन दोनों समुहों के मध्यमानों में अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। गणना उपरांत टी–मान 2.48 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता अंष 98 का टी–सारणी मान 0.05 स्तर में 1.98 है। इस प्रकार गणना द्वारा प्राप्त मान सारणीगत मान से अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि षासकीय व अषासकीय माध्यमिक विद्यालय के षिक्षकों में सार्थक अंतर है।

H02 बिलासपुर में माध्यमिक विद्यालय के महिला एवं पुरुश षिक्षकों का षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं होगा।

सारणी क्रमांक–4.2

माध्यमिक विद्यालय के महिला एवं पुरुश षिक्षकों का षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मूल्य ’0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है।

प्रतिदर्ष	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी–मान	सारणी मान
महिला	50	45.36	6.58	0.505	1.86	1.98
पुरुश	50	44.42	6.15			

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

आकृति क्रमांक–4.2

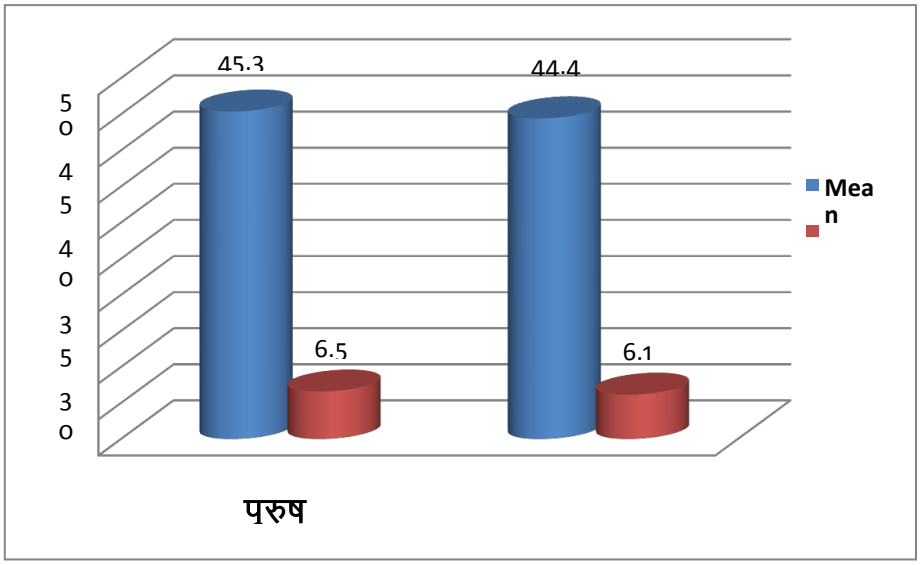

माध्यमिक विद्यालय के महिला एवं पुरुश षिक्षकों का षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान, मानक विचलनसारणी क्रमांक–4.2 एवं आकृति क्रमांक–4.2 के अवलोकन से स्पश्ट है कि षासकीय व अषासकीय विद्यालय के षिक्षकों की मध्यमान क्रमषः 45.36 व 44.42 तथा मानक विचलन 6.58 व 6.15 है। इससे यह ज्ञात होता है कि पुरुश षिक्षकों की षैक्षिक अभिवृत्ति का मध्यमान महिला षिक्षकों से अधिक है परंतु मानक विचलन से स्पश्ट है कि पुरुश षिक्षकों की षैक्षिक अभिवृत्ति में भिन्नता अधिक है जबकि महिला षिक्षकों की षैक्षिक अभिवृत्ति में अपेक्षाकृत कम भिन्नता है।

अतः पुरुश व महिला षिक्षकों का मध्यमान एवं मानक विचलन को अध्ययन करते हुए दोनों समूहों के बीच अंतर निकालना वस्तुतः संभव नहीं है अतः इसका टी–मान ज्ञात करना आवष्यक है। गणना उपरांत टी–मान 1.86 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता अंष 98 का टी–सारणी मान 0.05 स्तर में 1.98 है। इस प्रकार गणना
द्वारा प्राप्त सारणीगत मान से कम है। अतः निश्कर्श निकलता है कि षून्य परिकल्पना जो कि " बिलासपुर में माध्यमिक विद्यालय के महिला एवं पुरुश षिक्षकों का षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं होगा" स्वीकार की जाती है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि पुरुश व महिला षिक्षकों की षैक्षिक अभिवृत्ति लगभग समान है।

H03 बिलासपुर में माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान एवं गैर–विज्ञान विशययी

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

षिक्षकों का षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं होगा।

सारणी क्रमांक–4.3

माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान एवं गैर–विज्ञान विशययी षिक्षकों का षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मूल्य ’0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

प्रतिदष	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी–मान	सारणी मान
र–विज्ञान विशययी	53	45.89	5.45	0.505	4.24	1.98
विज्ञान विशययी	47	43.77	7.13			

आकृति क्रमांक–4.3

माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान एवं गैर–विज्ञान विशययी षिक्षकों का षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान व मानक विचलन

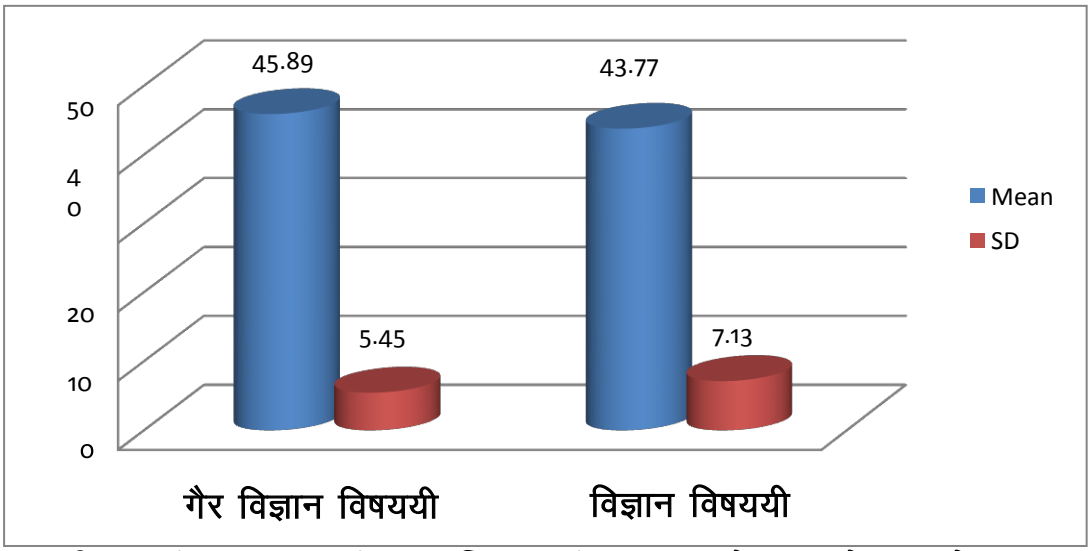

सारणी क्रमांक–4.3 एवं आकृति क्रमांक 4.3 के अवलोकन से स्पश्ट है कि गैर विज्ञान विशययी एवं विज्ञान विशययी षिक्षकों की मध्यमान क्रमषः 45.89 व
43.77 है। इससे यह ज्ञात होता है कि गैर विज्ञान विशययी षिक्षकों की

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

षिक्षकीय अभिवृत्ति का मध्यमान विज्ञान विशययी षिक्षकों से अधिक है परंतु मानक विचलन से स्पश्ट है कि गैर विज्ञान विशययी षिक्षकों की षिक्षकीय अभिवृत्ति में भिन्नता कम है जबकि विज्ञान विशययी षिक्षकों की षैक्षिक अभिवृत्ति में अपेक्षाकृत अधिक भिन्नता है।

अतः गैर विज्ञान विशययी षिक्षकों एवं विज्ञान विशययीषिक्षकों की मध्यमान एवं मानक विचलन का अध्ययन करते हुए दोनों समूहों के मध्य अंतर निकालना वस्तुतः संभव नहीं है अतः इसका टी–मान 4.24 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रतांष 98 का टी–सारणी मान 0.05 स्तर में 1.98 है। इस प्रकार गणना द्वारा प्राप्त मान सारणीगत मान से अधिक है। अतः निश्कर्श निकलता है कि षून्य परिकल्पना कि '' बिलासपुर में माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान एवं गैर–विज्ञान विशययी षिक्षकों का षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं होगा'' अस्वीकार की जाती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि विज्ञान एवं गैर–विज्ञान विशययी षिक्षकों का षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में अंतर है।

निष्कर्ष एवं चर्चा

इस अध्ययन द्वारा निम्नलिखित निश्कर्श प्राप्त हुए .

- षासकीय एवंअषासकीय माध्यमिकविद्यालय के षिक्षकों का षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया।
- माध्यमिक विद्यालय के महिला एवं पुरुश षिक्षकों का षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान विशययी एवं गैर विज्ञान विशययी षिक्षकों का

षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया।

षैक्षणिक संतुश्टि किसी षिक्षक के विभिन्न अभिवृत्तियों का परिणाम होती है। संतुलित अर्थ में अभिवृत्तियॉ व्यवसाय से जुडे व्यक्तियों का निश्पक्ष व्यवहार और उसी की दुसरी बातें होती है। जिस विशय का षिक्षकों को अध्यापन करना हो उस विशय का उसे अच्छी तरह ज्ञान होना चाहिए। विशय का ज्ञान षिक्षक को सफल षिक्षण के योग्य बनाता है। षिक्षक को षिक्षण व्यवसाय के प्रति आस्था होनी चाहिए। यदि षिक्षक षिक्षण व्यवसाय में बाध्य होकर आया

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

है तो वह कभी भी लगन तथा परिश्रम के साथ नहीं पढ़ा सकता है। वह सदैव उदासीनता का अनुभव करेगा। अध्यापक को केवल अपने विशय का ज्ञान होना आवष्यक नहीं है वरन् उसे मनोविज्ञान का व्यवहारिक ज्ञान भी होना चाहिए जिसके द्वारा वह छात्रों की मनोवृत्तियों का अध्ययन कर सके तथा उनकी अनेक समस्याओं का समाधान कर सके। उसे विषेश रूप से बाल मनोविज्ञान का ज्ञान होना अधिक आवष्यक है क्योंकि इसकी सहायतासे वह बालक की व्यवहारिक विभिन्नताओं, उनकी विषेशताओं, प्रकृति, आदत, व्यवहार इत्यादि का ज्ञान भली प्रकार से कर सकता है।

षिक्षकों को षिक्षकीय कार्य के अलावा अन्य कार्यों जैसे जनगणना, चुनाव मतदाता सूची तैयार करना, पल्स पोलियो अभियान, कुश्ठ निवारण अभियान आदि में भी संलग्न किया जाता है जिससे वे अपनी षाला में पर्याप्त समय नहीं दे पाते और उनके कार्य में निरंतर व्यवधान आता है। अतः इस प्रकार के कार्य से उन्हें दूर
रखा जाना चाहिए।

षिक्षकों की अध्यापन अभिवृत्ति उच्च रखने के लिए षिक्षा अधिकारियों द्वारा समयबद्धनिरीक्षण तथा प्रषिक्षण कार्यक्रम चलाया जाना चाहिए। षिक्षकों की अध्यापन अभिवृत्ति उन्नत करने के लिये षासकीय नियमों का कड़ाई से अनुपालन कराया जावे और पालन करने वाले के विरूद्ध आवष्यक अनुषासनात्मक कार्यवाही किया जाना चाहिए।

भावी षोध हेतु सुझाव

1. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के नियमित एवं षिक्षाकर्मी षिक्षकों की षिक्षकीय अभिवृत्ति का अध्ययन।
2. पूर्व माध्यमिक विद्यालयों के उच्च वर्ग षिक्षक एवं षिक्षाकर्मी षिक्षकों की षिक्षकीय अभिवृत्ति का अध्ययन।
3. ग्रामीण एवं षहरी विद्यालयों के षिक्षकों की षिक्षकीय अभिवृत्ति का अध्ययन।
4. केन्द्रीय एवं नवोदय विद्यालयों के षिक्षकों की षिक्षकीय अभिवृत्ति का अध्ययन।
5. प्रषिक्षित एवं अप्रषिक्षित षिक्षकों की षिक्षकीय अभिवृत्ति का अध्ययन।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

संदर्भ ग्रंथ सूची

- *अत्तार, यू. ए. 1983, टीचर्सः ए स्टडी इन सोषल मोबिलिटी, कर्नाटक यूनिवर्सिटी कर्नाटक ।*
- *आदित्य, आर. पी. 1997, षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत् षिक्षाकर्मी व्याख्याताओं की षिक्षकीय अभिवृत्ति एवं कार्य संतुश्टि का अध्ययन, लघुषोध , गुरु घासीदास विष्वविद्यालय, बिलासपुर।*
- *भार्गव, एम. 2010, आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, आगरा, एच. पी. भार्गव बुक हाउस।*
- *दत्ता, के. 1998 बिलासपुर जिले के प्राथमिक विद्यालयों की षिक्षकों की व्यावसायिक संतुश्टि एवं जनतांत्रिक अभिवृत्ति का अध्ययन, लघुषोध, गुरु घासीदास विष्वविद्यालय, बिलासपुर।*
- *गुप्ता, वाय. के. 1997, ए स्टडी ऑफ एटीट्यूड टूवर्ड्स माडर्नाजेषन ऑफ सेकेण्डरी स्कूल टीचर्स, इन द प्रोग्रेस ऑफ एजूकेषन, वाल्यूम–72 दिसम्बर।*
- *गुप्ता, एस. पी. 2011 उच्चतर षिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद, षारदा पुस्तक भवन।*
- *गैरेट, एच. ई. 2011 स्टेटिस्टिक इन साइकोलॉजी एण्ड एजुकेषन, दिल्ली, सुरजीत पब्लिकेषन।*
- *करलिंगर, एफ. एन. 2002, फाउण्डेषन ऑफ बिहेविरियल रिसर्च, दिल्ली, सुरजीत पब्लिकेषन।*
- *मंगल, एस. के. 2011, षिक्षा मनोविज्ञान, नई दिल्ली, प्रिन्ट्स हाल इंडिया।*
- *मिश्रा, एस. 2006, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत षिक्षाकर्मी एवं विभागीय व्याख्याताओं की षिक्षकीय अभिवृत्ति एवं कार्य संतुश्टि का अध्ययन, लघु षोध,* गुरु घासीदास विष्वविद्यालय, बिलासपुर।
- माझी, परितोश 2012, माध्यमिक स्तर के षासकीय एवं अषासकीय विद्यालय के षिक्षकों की षैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन, लघुषोध, गुरु घासीदास विष्वविद्यालय, बिलासपुर।
- मारिया, जे. 2010, षिक्षक प्रषिक्षकों की प्रषिक्षकीय अभिवृत्ति और कार्य संतुश्टि का अध्ययन, एजुट्रेक्स, नीलकमल पब्लिकेषन्स, वाल्युम–9।
- मुमथास, एन. एस. 2012, प्रषिक्षण पूर्व और पष्चात् षिक्षकों की षिक्षकीय अभिवृत्ति का अध्ययन, एजुट्रेक्स, नीलकमलपब्लिकेषन्स, वाल्युम–3 हैदराबाद।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

- पाण्डेय, के. पी. 2006, षैक्षिक अनुसंधान, वाराणसी, विष्वविद्यालय प्रकाषन।
- रमन्ना, एल. 1985, माडर्निस्ट ओरियेन्टेषन एण्ड रोल परफार्मेंस ऑफ विषाखापट्टनम म्यूनिस्पल स्कूल, आन्ध्रा विष्वविद्यालय, वाल्टेयर।
- राव, एस. आर. 1980, ए स्टडी ऑफ इफेक्ट ऑफ प्रीस्कूल एजुकेषन ऑन प्राइमरी एन्ड सेकेण्डरी एजुकेषन, इन थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेषन, नई दिल्ली, एन. सी. ई. आर. टी. 1978–89।
- श्रीवास, यू. 2007, षिक्षाकर्मी एवं विभागीय षिक्षकों की षिक्षकीय अभिवृत्ति का अध्ययन, लघुषोध, गुरु घासीदास विष्वविद्यालय, बिलासपुर।
- षर्मा, आर. 1996, बी. एड. प्रषिक्षार्थियों के कक्षा षिक्षण अवधि में उनकी जनतांत्रिक अभिवृत्ति का विष्लेशणात्मक अध्ययन, लघुषोध, गुरु घासीदास विष्वविद्यालय, बिलासपुर।
- सरन, एस. ए. 1975, ए स्टडी ऑफ टीचर्स एटीट्यूड टुवार्ड्स टीचिंग प्रोफेषन एन्ड सरटेन पर्सनेलिटी वेरिएबल्स एज रिलेटेड टु देयर ऑफ एजुकेषन एण्ड अमाउन्ट ऑफ एक्सपीरिएन्स, आगरा विष्वविद्यालय आगरा।
- सिंह, ए. के. 2008, षिक्षा मनोविज्ञान, पटना, भारती भवन। सिंह, आर. 2010, षैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेषन।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language